काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

भारतवर्ष की प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी काशी को अति प्राचीनकाल से ही देश की सांस्कृतिक केन्द्रस्थली होने का सौभाग्य मिला है। शिल्प हो अथवा कला, धर्म हो अथवा दर्शन, साहित्य हो अथवा संगीत- सभी क्षेत्रों में इस अप्रतिम नगरी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसने सम्पूर्ण विश्व को अपने पाण्डित्य की गरिमा से विमुग्ध कर मार्गदर्शक होने का गौरव अर्जित किया है। संगीत के विगत तीन-चार सौ वर्षों के प्राप्त आधे-अधूरे अवशिष्ट इतिहास के अवलोकन से यह स्पष्ट विदित होता है कि सरस्वती की अजस्त नाद-धारा निरन्तर प्रवाहित होकर आज भी इस नगरी एवं यहाँ के संगीतज्ञों के वर्चस्व को गौरव प्रदान करती चली आ रही है। संगीत-जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्रों के रूप में इस नगरी के प्रसिद्ध-मनोहर मिश्र, शिवदास-प्रयाग मिश्र, ननकूलाल मिश्र, शिवा-पशुपति, मौजुद्दीन खाँ बड़े रामदास मिश्र, छोटे रामदास मिश्र, सरजूप्रसाद मिश्र, बीरू मिश्र, हरिशंकर मिश्र, दाऊजी मिश्र, प. श्री चन्द्र मिश्र, अनोखे लाल मिश्र, उस्ताद मुश्ताक अली खाँ, उस्ताद विसमिल्ला खाँ, प. रविशंकर, सिदाए देवी, गुदई महाराज, प. किश्न महाराज, गोपाल मिश्र बैजनाथ मिश्र, सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बेगम, प. महादेव प्रसाद मिश्र, श्रीमती गिरिजा देवी सरीखे अनगिनत सशक्त हस्ताक्षर अपने जीवन काल में ही संगीत-जगत् की गौरव-गाथा बन चुके हैं।

काशी नगरी के जीवन काल में एक समय ऐसा भी था, जब घरानेदार संगीतज्ञों के गढ़ के रूप में काशी का सम्पूर्ण क्षेत्र चार भागों में विभाजित था। इसमें से एक घराना 'तेलियानाला घराना' (बीनकार, सितारपादक उस्ताद आशिक अली खाँ) दूसरा 'पियरी घराना' (प्रसिद्ध मनोहर मिश्र), तीसरा 'रामा पुरा मुहल्ले का घराना' शिवदास प्रयाग मिश्र (जो बाद में कबीर चौरा मुहल्ले में आ बसे) और चौथा सबसे विराट घराने के रूप में सम्पूर्ण 'कबीर चौरा मुहल्ला' जहाँ के पग-पग पर पूरी काशी के लब्ध-प्रतिष्ठ, विश्व-विश्रुत गुणी-गन्धर्वों का दो तिहाई से अधिक समुदाय निवास करता था। इस मुहल्ले में गायन-क्षेत्र में श्री गजदीप मिश्र (अप्रतिम ठुमरी गायक, मौजुद्दीन खाँ के आदर्श एवं गुरू) जयकरण मिश्र (मूर्धन्य-विद्वान एवं बड़े रामदास मिश्र के श्वसूर) श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र (पं. छोटे रामदास मिश्र के नाना), सारंगी वादन क्षेत्र में पं. शम्भूनाथ मिश्र, सुमेरू मिश्र, बिहारी मिश्र, बिरई मिश्र, बड़े गणेश मिश्र, शीतल मिश्र तबलावादन-क्षेत्र में पं. बनारस बाज एवं घराने के प्रवर्तक पं. रामसहायजी, एवं उनकी शिष्य-परम्परा में प्रताप महाराज, शरणजी, बैजूजी, सितार-क्षेत्र में विलक्षण लयभास्कर पं. ननकूलाल मिश्र, नृत्य-क्षेत्र में पं. शुकदेव महाराज आदि के घरानेदार विद्वानों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी चतुर्मुखी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे, जो गायन, बीन, सारंगी, सितार, तबला एवं नृत्य के समुचित पारंगत एवं मान्य विद्वान थे। ऐसे पारंगत विद्वानों में पियरी-घराना एवं श्री दरगाही मिश्र पूर्ण पटु मान्य विद्वान, माने जाते थे।

काशी का कबीरचौरा मुहल्ला सदियों से अब तक प्रमुख संगीतज्ञों का निर्विवाद मान्य गढ़ रहा है, जहाँ जन्म लेकर न जाने कितने विश्व विश्रुत विद्वानों ने इस मुहल्ले और नगर की ख्याति और गरिमा को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। इस मुहल्ले के संगीतज्ञों का कोई ऐसा परिवार शायद ही हो जिसमें किसी-न-किसी समय किसी विश्व विख्यात कलाकार ने जन्म न लिया हो। सारांश यह कि हर परिवार की किसी न किसी महान संगीत-विभूति का अपने समय में संगीत-क्षेत्र में विशिष्ट एवं सहत्वपूर्ण स्थान अवश्य रहा और आज भी मान्य है। हर घरानों की अपनी निजी एवं मौलिक विशेषता रही। किसी घराने में ध्रुपद, धमार, होरी का वर्चस्व था, तो कोई ख्याति शैली का कोई टप्पा-ठुमरी अंग में कोई सुरीलेपन-मिठास में कोई लयकारी प्रधान अंग में सुदक्ष, कोई स्वतंत्रवादन में अनुपम तो कोई-संगीत में बेजोड़ स्थान रखता था। कोई-कोई घराना ऐसा विशिष्टतम रहा, जो चारों पटकी गायकी एवं वादन शैली में पूर्ण पटु एवं पारंगत था। सभी घरानों ने अपनी मौलिकता एवं विशेषता से अपनी अलग पहचान बना रखी थी और सभी घरानेदार एक दूसरे की सौलिक विशेषताओं का हृदय से पूर्ण सम्मान करते थे तथा परस्पर प्रगाढ़ प्रेमबन्धन में बँधे थे। एक दूसरे की कला-साधना के प्रशंसक और आपसी ईर्ष्या-द्वेष से कोसों दूर धुरन्धर विद्वान् संगीतकाश के देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में काशी नगरी की ख्याति में चार चाँद लग रहे थे। संगीत-जगत् में व्याप्त आज जैसी स्थिति उस समय नहीं थी।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

काशी के घरानेदार संगीतज्ञों में एक ओर जहाँ ध्रुपद, धमार, होरी, ख्याल अंग के अनेक विशिष्ट कलाकार थे, वही कुछ अधकचरे संगीतज्ञों की टिप्पणी के अनुसार शुद्र गायन शैली की संज्ञा प्राप्त ठुमरी-टप्पा गायकी के ऐसे-ऐसे रससिद्ध कलाकार थे, जिनकी सूझबूझ पैनेपन और मधुकरी गायकी का सिक्का कलाकारों से लेकर जनसामान्य तक सभी पर जमा था। यही कारण है कि सभी प्रकार की गायन-वादन शैली की समुचित शिक्षा देने वाले विशिष्ट विद्वानों की जितनी विशाल संख्या इस नगरी को प्राप्त रही, उतनी संख्या में किसी अम्य नगर में सूर्धन्य विद्वान कलाकारों का मिलना दुष्कर रहा, जिसके कारण नगर का साधारण संगीत श्रोता भी गायन-वादन-नर्तन की प्रत्येक शैलियों के कार्यक्रमों को बराबर देखते-सुनते उनकी बारीकियों से परिचित रहा और अपने क्षेत्र के निष्णात, परिपक्क कलाकार ही काशी में कार्यक्रम प्रस्तुत करके यश लूट पाते थे, अधकचरे संगीतज्ञ काशी में सार्वजनिक प्रदर्शन करने में संकोच का अनुभव करते थे। देश के अन्य स्थानों के कलाकारों के हृदय में काशी में सफल कार्यक्रम देकर जनता और विद्वानों की प्रशंसा पाने की तीव्र लालसा बनी रहती है। उनकी धारणा है कि जब तर काशई के संगीत प्रेमियों एवं विद्वानों द्वारी उनकी कला-साधना प्रशंसित नहीं होगी तब उनकी साधना मानो अधूरी से है।

काशी की जनता ने अपने नगर के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ ही अन्य नगरों के मान्य एवं लब्धप्रतिष्ठ अनेक कलाकारों की कला-साधना का पूर्ण तन्मयता से रसास्वादन करते हुए जितना आदर और अविस्मरणीय मधुर अनुभव उनके मानसपटल को आज भी झेकृत करता रहता है, जिससे वे कलाकार बार-बार काशी में अपना सफल कार्यक्रम देने के लिए उत्सुक रहते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज की विषमताओं एवं अनेक विसंगतियों के बावजूद संगीत जगत् के अनेक गायक, वादक, नर्तक, यहाँ कार्यक्रम देने में गौरव का अनुभव करते है औ काशई नगरी को संगीत-जगत् के लिए कसौटी मानकर यहाँ की मिट्टी को विशेष सम्मान एवं प्यार देते हैं तथा बनारस के संगीत प्रमियों की बारीक पकड़ की प्रशंसा करते अघात नही है। नगर में शास्त्रीय संगीत-समारोह के सुरूचि सम्पन्न पोषक वर्ग में जो उत्साह और चलचित्र संगीत अथवा किसी शुद्र स्तर के आयोजन पर दिखाई नहीं देता। शहर का सुरूचि सम्पन्न प्रतिष्ठित वर्ग ऐसे आयोजनों में सम्मिलित भी नहीं होता, केवल नई पीढ़ी की भीड़ इन आयोजनों में अधिक रूचि लेती है। शास्त्रीय संगीत के प्रति ऐसी दृढ़ आस्था, सद्भावना, सम्मान और प्रेम इस नगरी की सुरूचि-सम्पन्नता एवं गरिमा का परिचायक है।

काशी के गौरवपूर्ण संगीत-इतिहास को सदियों तक अपना कला साधना से जीवन्त बनाए रखने में यहाँ की कला-समर्पिता, संगीत साधिका गायिकाओं का विशेष योगदान रहा है, जिनका उल्लेख बौद्धकालीन जातक-कथाओं में वर्णित काशीराज ब्रह्मदत्त शासनकालीन चित्रलेखआ, श्यामा, सुलसा आदि नगर वधुओं से लेकर बाद की पीढ़ी की ख्यातिनामा विद्याधरी, बड़ी मैना, हुस्ना, जद्दन, बड़ी मोती, राजेश्वरी, काशी सिद्धेश्वरी सरीखी रस सिद्ध गायिकाओं की अटूट श्रंखला के रूप में प्राप्त होता रहा है। इस वर्ग विशेष को संगीत की उत्कृष्ट शिक्षा देकर उन्हें सुदक्ष कलाकार बनाने में काशी के घरानेदार संगीतज्ञों को एक समय अपना सामाजिक सम्मान भी एक प्रकार से खोना पड़, जिसकी लेशमात्र भी परवाह न करते हुए इन घरानेदार संगीतज्ञों ने उन सभी गायिकाओं की अपनी उत्कृष्ट शिक्षा से परिपक्क कर जब एक सुलझे कलाकार के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया तो काशी ही नहीं समस्त संगीत प्रेमी समाज उनकी कलासाधना से न केवल प्रभावित हुआ, अपित उन्हें विशिष्ट भी मानने को बाध्य हुआ, जिनकी संगीत साधना से जन समान्य के पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, मांगलिक उत्सवों का व्यक्तित्व भी निखर कर विशिष्ट हो उठता और देश की प्रमुख रियायतों के सुणग्राही नरेशों के आमंत्रण पर काशई की गौरवशाली संगीत-परम्परा की सुगन्ध से सभी अभिभूत हुए और इन गायिकाओं ने अपने विद्वान गुरूओं की गरिमा बढ़ाते हुए काशी की धवल कीर्तिपताका पूरे देश में फहराकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

एक उत्कृष्ट सारंगीवादक किसी को संगीत शिक्षा देकर उत्कृष्ट गायक बना सकता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण काशी की अनेक उत्कृष्ट गायिकाएँ हैं, जो किसी प्रसिद्ध सारंगीवादक की ही शिष्य-परम्परा में रहीं क्योंकि सारंगीवादन में विशिष्टता प्राप्त करने के लिए प्रथमतः गायन की विभिन्न शैलियों की शिक्षा आवश्यक है तभी किसी भी अंग-विशेष अथवा शैली-विशेष की गायकी की कुशल संगति की सुदक्षता प्राप्त हो सकती है। ऐसे ही स्वनामधन्य विद्वान सारंगी वादकों की कुशल शिष्याओं के रूप में इन कोकिलकंठी गायिकाओं के अपने कंठ-माधुर्य के लालित्म से काशी का नाम उज्जवल किया और

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी संगीत-साधना से सदियों तक काशी की संगीत-परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपना प्रमुख एवं अनुपम योगदान दिया है। देश पर हुए अती के अनेक विदेशी आक्रमणों से देश का धार्मिक-सांस्कृतिक वातावरण भी खण्डित हुआ, किन्तु श्यामा, सुलसा, गुलबदन, इमामबाँदी से लेकर टामी, मैना, विद्याधरी, हुस्ना तक ने काशी की सांस्कृतिक चेतना मं शिथिलता नहीं आने दी और विषम, प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपनी एकलव्यीय साधना में रत रहते हुए काशी एवं संगीतकला को जीवन्त बनाए रखा, उसे विलुप्त नहीं होने दिया। वाद्यों में सबसे कठिन किन्तु मानव कंठ की सीमा तक वादन शैली का प्रमाणिक अनूठा वाद्य सारंगी किसी समय संगीत-जगत् में लोकप्रियता की चरम सीमा पर विराजमान रहा, वही लोकप्रियता आज तबला वाद्य को प्राप्त हैं। संगीत-जगत् की ओछी राजनीति का शिकार होकर सारंगी सीखने वालों और कुशल सारंगी-वादकों की संख्या धीरे-धीरे सीमित होती जा रही है और अनेक घरानेदार सारंगी वादकों के प्रतिभाशाली वंशज भी सारंगी के भविष्य के प्रति निराश होकर गायन, सितार, सरोद, सन्तूर, तबला आदि की ओर उन्मुख हो रहे हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में उन्हें अपना भविष्य अधिक उज्जवल दिखाई पड़ रहा हैं।

काशी के घरानेदार संगीतज्ञों के अतिरिक्त भी नगर में संगीतसिद्ध विद्वानों की श्रृंखला था जिसकी विद्वत्ता से संगीत-जगत् पूर्णरूपेण सुपरिचित था। ऐसे गुणियों में काशी के महाराष्ट्रीय विद्वानों में मूर्धन्य श्री वासुदेव बुआजोशी का नाम अग्रणी है, जिन्हें भैया जोशी जैसा सुयोग्य पुत्र एवं बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर, विष्णु पन्त छजे सरीखा सुयोग्य शिष्य मिला। श्री बालकृष्ण बुआ इचलकरंगीकर ने अपनी संगीतसाधना, निष्ठा, तपस्या और लगन से संगीतकला के अक्षय भण्डार में अबगाहन कराते हुए संगीत-जगत को पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसा रससिद्ध गायक, संगीत-उद्धारक, निरभिमानी सन्त शिष्य दिया। इस महान पुष्प ने भारतीय संगीत को जन-जन कर पहुँचाने का अखण्ड व्रत लेकर देश के इस कोने से उस कोने तक की यात्रा कर संगीत की शइक्षा के लिए देश के विभिन्न नगरों में संगीत-विद्यालयों की स्थापना की। पं. विष्णु दिगम्बर, मूर्धन्य लोकप्रिय गायक, नायक, उत्कृष्ट संगीत शिक्षक, संगीत शास्त्रज्ञ, वाग्गेयकर संगीत-समीक्षक, लेखक आदि के रूप में पं. ओंकार नाथ ठाकुर, पं. डी.वी. पलुस्कर (पुत्र) जैसे मशस्वी विद्वानों की अटूट श्रंखला मिली, जिन्होंने संगीत के उत्थान में अपना विशेष योगदान देकर द्वितीय ग्वालियर घराने की विशिष्ट गायन-परम्परा की नींव डाली, और उसे जनमानस में लोकप्रिय बनाकर, अपने पूज्यगुरू पं. विष्णु दिगम्बर पलुसकर के परिकल्पित-स्वप्न को साकार कर जीवन की अन्तिम साँस तक गुरू के श्रीचरणों में संगीत सुमनाञ्जलि अर्पित करने का शिष्य धर्म निभाया।

काशी के श्री रामचन्द्र गोपाल भावे (समय-सन् १८८५ ई. अपने समय के अप्रतिम ध्रुपदगायक के रूप में विख्यात थे, जिनकी कुशलतम शिष्या पूना की सुविख्यात गायिका सुन्दरी बाई थी, जो अपने समकालीन गायिकाओं में अपना विशेष स्थान रखती थीं। काशी के वेतिया घराने की ध्रुपदगायकी के अप्रतिम विद्वान् श्री जयकरण मिश्र की शिष्य-परम्परा में खण्डहार बानी के पारंगत श्री वेणी माधव भट्ट-भैया जी लॉडे (भट्जी) ध्रुपद-धमार परम्परा में सोमनाथ गणोरकर और सोमनाथ बहेरे प्रमुख थे। पं. भोलानाथ भट्ट (जो प्रथमतः पं. जयकरण मिश्र के शिष्य थे) और वेदमूर्ति नारायण भट्ट फड़के काशी के विद्वान ध्रुपद गायकों में अग्रणी थे।

देश के मूर्धन्य विद्वान् गायक पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने कई दशकों तक काशी नगरी को अपनी कार्यस्थली के रूप में चुनकर अपनी शिष्य-प्रशिष्य-परम्परा में पं. बलवन्त राय भट्ट, श्रीमति डॉ. एन. राजम्, सुश्री डॉ. प्रेमलता शर्मा, कनकराय त्रिवेदी, चितरंजन ज्योतिषी, प्रदीप दीक्षित, अर्चना दीक्षित, राजेश्वर आचार्य की कलाक्षमता से संगीत-जगत् को परिचित कराया। इ सके अतिरिक्त श्री कृष्ण हरि हिर्लेकर, दुण्ढ़ि राज पलुस्कर, श्री शिव प्रसाद त्रिपाठी, 'गायनाचार्य', दामोदर विष्णु कालविष्ट, डी.एस. बेलसरे, भालचन्द्र चिन्तामणि दामले, भालचन्द्र पाटेकर आदि अनेक संगीतज्ञों ने काशी में निवास करते हुए काशी के गौरव को बढ़ाया हैं। सुप्रसिद्ध ठुमरी गायक धीरेन बाबू रामजी शउक्ल गुजराती, कमल सिंह और वर्तमान में काशी के लोकप्रिय ठुमरी गायक हारमोनियम वादक ध्रुवजी से सभी परिचित हैं, जो गया के रससिद्ध हारमोनियम वादक स्वर्गीय सोनीजी की शिष्य-परम्परा के प्रतिनिधि हैं। काशी के अन्य सुप्रसिद्ध हारमोनियम वादकों में गणपतिजी, वीरू महाराज, हरेन्द्र भट्टाचार्य, मुनीमजी, ईश्वरीलाल नेपाली आदि उल्लेखनीय है।

प्रसिद्ध वीणावादकों में श्री महेशचन्द्र सरकार, सन्त बाबू एवं पं. लालमणि मिश्र की विद्वता से विदेशी भी चकित थे, और

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

उनसे सीखने आते थे। वायलिन वादकों में जी.एन. गोस्वामी, जोई श्रीवास्तव, कृष्ण विनायक भागवत, रामूशास्त्री एवं देश की महिला वायलिन वादिका के रूप में अत्यन्त लोकप्रिय डॉ. श्रीमति एन. राजम् आपनी अलग पहचान बना चुकी हैं। सरोद वादकों में उसताद अलाउद्दीन खाँ की शिष्य-परम्परा में पं. ज्योतिन भट्टाचार्य, भोलानाथ भट्टाचार्य, राजेश मोइत्रा आदि की शिष्य-परम्परा में अनेक उदीयमान कलाकार साधनारत हैं। सितार-वादकों में ननीगोपाल, मोतीलाल, उस्ताद मुश्ताक अली खाँ, राम गांगुली, गुल्लू महाराज, विमला-नन्दन चटर्जी, ओझाजी, राम चक्रवर्ती, राजमान सिंह एवं भारत की महान विभूति, विश्वविख्यात भारतीय संगीतदूत पं. रविशंकर काशी के ही कहलाते हैं। बाँसुरी वादन में शहनाई वादक नन्दलाल के पुत्र श्यामलाल, रघुनाथ प्रसन्ना राजेन्द्र प्रसन्ना, भोलानाथ, तारकनाथ नाग, छेडीलाल श्रीवास्तव, राधेश्याम जायसवाल एवं क्लारनेट-वादन में राजन बाबू प्रसिद्ध हुए।

शहनाई वादन के क्षेत्र में अपने वाद्य के प्रतीक, एवं विश्व के अनुपम वादक उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ, (उनके मामा एवं गुरू विलायतू, भ्राता शमशुद्दीन एवं पारिवारिक पुत्र, पौत्र, भतीजा, जमाता आदि। इमदाद हुसेन, इकबाल हुसेन, प्यारे हुसेन-दुलारे हुसेन, महबूब अली, खादिम अली एवं उनके पूर्वज, बाबुलाल-सुद्धूराम-नन्दलाल-कन्हैयालाल-दुर्गालाल, शिव प्रसाद, आत्माराम, कृष्णाराम आदि प्रमुख हैं।

पखावज्र वादन में जोधसिंह (नाना पानसे के गुरू) मदनमोहनजी, भोलानाथ पाठक, मन्नूजी एवं उनके शिष्य अमरनाथ मिश्र (महंत संकटमोचन) एवं श्रीकान्त मिश्र, विभूति मिश्र, वृन्दावनदास, रामदेव पाठक सुबोध बाबू, बाबूलाल, त्रिभुवन उपाध्याय, जमुनादास ने अपनी विशेष पहचान बनाई। तबलावादकों में अपने युग के लोकप्रिय श्री वीरूजी-वासुदेवजी-लच्छु-केदारनाथ भौमिक, जे मेसी, शंकर सिंह, अनोखेलालजी के शिष्यों में गणेश प्रसाद, रमेशराय, छोटे लाल, वाद्यशिरोमणि पं. कंठे महाराज के शिष्य आशुतोष भट्टाचार्य, उनके पुत्र देवव्रत भट्टाचार्य कृपाशंकर जायसवाल आदि से अधिकाधिक लोग परिचित हैं।

सारंगीवादकों में उस्ताद आशिक अली खाँ, झल्लन खाँ, चन्दा खाँ, सिकन्दर अली खाँ, संकठाराय, सीताराम गन्धर्व, लडुन खाँ, मुन्नुजी, माठूराम, घनश्याम छोटे, उदय आदि प्रसिद्ध रहे। ढ़ोलक वादन क्षेत्र में काली प्रसाद, बहादुर, सुरजन सिंह, सचिता राय, गोपाल आदि लोकप्रिय हुए। सन्तूर वादन में विश्व के लोकप्रिय कलाकार शिव कुमार शर्मा के पिता श्री उमादत्तजी काशी के गायनाचार्य पं. बड़े रामदास मिश्र के शिष्य रहे। अतः उन्हें काशी का मानना उचित है। पं. लालमणि मिश्र के शिष्य ओम प्रकाश चौरसिया, (भोपाल में कार्यरत), सिद्धनाथ मिश्र ने अच्छी ख्याति अर्जित की है।

कथक नृत्य में श्रीमति मधुरानी, रूक्मिणी, मधु पाटेकर, रूबी चटर्जी, सरला गुप्ता आदि ने अपनी साधना से सफलता एवं ख्याति अर्जित की। भरत-नाट्यम् के सुप्रसिद्ध एवं पारंगत कलाकार सी.वी. चन्द्रशेखर, श्रीमति जया चन्द्रशेखर एवं उनकी पुत्री एवं पी.सी. होम्बल से सभी सुपरिचित हैं, जिन्होंने महिला महाविद्यालय (काशी हिन्दु विश्व विद्यालय), बसन्त कॉलेज, राजघाट, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा एवं संगीतकला-संकाय आदि ने अनेक वर्षों तक कार्यरत रहकर नगर के संगीत प्रेमियों को इस अभिनव नृत्य शैली से परिचित कराने में अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह किया है।

इस संक्षिप्त सर्वेक्षण के अनुसार काशई की सदियों प्राचीन संगीत परम्परा को जीवन्त बनाये रखने में, विशिष्ट घरानेदार गायकों, वादकों नर्तकों के अतिरिक्त गैर पेशेवर, शौकिया, कालाकारों एवं समाज के हर वर्ग का भरपूर सहयोग हमेशा मिलता रहा, जिससे वर्तमान में भी संगीत की प्रत्येक विद्या में इस नगरी का वर्चस्व शीर्ष पर है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.